कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 27 अक्टूबर 2025 वर्ष-24 अंक - 8 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

राज्यपाल को लोक सेवा आयोग अध्यक्ष ने वार्षिक प्रतिवेदन सौंपा

रायपुर। राज्यपाल श्री रमेन डेका से राजभवन में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग की अध्यक्ष सुश्री रीता शांडिल्य ने मुलाकात की। उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग का चौबीसवां वार्षिक प्रतिवेदन श्री डेका को सौंपा। इस अवसर पर राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. प्रवीण वर्मा, डॉ. सरिता उइके, श्री संतकुमार नेताम, श्री चंद्र कुमार अजगले एवं परीक्षा नियंत्रक श्रीमती लीना कोसम उपस्थित थीं।

प्राकृतिक आपदाओं से पहले मिलेगी चेतावनी

सचेत', 'दामिनी' और 'मेघदूत' ऐप बनेंगे सुरक्षा कवच

रायपुर। अब बाढ़, आकाशीय बिजली, चक्रवात, भूकंप और लू जैसी आपदाओं की जानकारी लोगों को पहले ही मिल सकेगी। भारत सरकार ने समय रहते अलर्ट देने के लिए 'सचेत', 'दामिनी' और 'मेघदूत' मोबाइल ऐप विकसित किए हैं, जिन्हें गूगल प्ले स्टोर से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। आपदा संबंधी किसी भी स्थिति में तत्काल मदद के लिए टोल फ्री नंबर 1070 भी जारी है।

आकाशीय बिजली से सबसे ज्यादा जान-माल की हानि होती है। ऐसे में 'दामिनी ऐप' बिजली गिरने के खतरे का 10-30 किलोमीटर पहले अलर्ट दे देता है और बचाव के उपाय भी बताता है। वहीं 'मेघदूत ऐप' किसानों के लिए बेहद उपयोगी है, क्योंकि यह मौसम पूर्वानुमान, तापमान, वर्षा और हवा की दिशा जैसी सटीक जानकारी उपलब्ध कराता है, जिससे किसान अपनी फसल से जुड़े फैसले समय पर ले सकते हैं। इसी तरह 'सचेत ऐप' राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा संचालित है, जो रीयल-टाइम चेतावनी भेजकर नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर जाने में मदद करता है। यह ऐप जीपीएस आधारित अलर्ट, आपातकालीन संपर्क और राहत केंद्रों की जानकारी भी उपलब्ध कराता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इन ऐप्स के उपयोग से समय रहते सतर्कता बढ़ेगी और जन-धन की हानि में बड़ी कमी आएगी।

भारत अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन 30 अक्टूबर से नई दिल्ली में

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने घोषणा की है कि भारत अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन (बीआईआरसी) 2025, 30-31 अक्टूबर 2025 को नई दिल्ली के भारत मंडपम, प्रगति मैदान में आयोजित होगा। यह सम्मेलन वैश्विक चावल व्यापार में पारदर्शिता, दक्षता और लचीलापन बढ़ाने के लिए उत्पादकों, निर्यातकों, आयातकों, नीति निर्माताओं और कृषि विशेषज्ञों को एक मंच पर लाएगा।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक और निर्यातक है, जो 172 से अधिक देशों को चावल आपूर्ति करता है। बीआईआरसी 2025 के माध्यम से भारत वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में अपनी स्थिति को और मजबूत करेगा। इस सम्मेलन में फिलीपींस, घाना, नामीबिया और गांबिया जैसे देशों के विदेश मंत्री भी भाग लेंगे।

बीआईआरसी 2025 में रु. 1.80 लाख करोड़ के नए चावल बाजारों की संभावना है और रु. 25,000 करोड़ के निर्यात समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाने का अनुमान है। सम्मेलन में 3,000 किसान, 80 देशों के 1000 विदेशी खरीदार और 2500 निर्यातक भाग लेंगे। इसके साथ ही, भारत की समृद्ध चावल विरासत पर आधारित एक कॉफी टेबल बुक का अनावरण किया जाएगा।

भारत ने 2024-25 में लगभग 150 मिलियन टन चावल का उत्पादन किया, जो वैश्विक उत्पादन का 28 प्रतिशत है, और 12.95 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के 20.1 मिलियन मीट्रिक टन चावल का निर्यात किया।

कृषि यंत्रों पर जीएसटी दरों में सुधार से किसानों को सीधा लाभ : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के ग्राम डुमरीखुर्द में आयोजित 'ग्राम चौपाल' में ग्रामीण साथ संवाद किया। श्री चौहान ने किसानों के हित में केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त प्रयासों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि सरकार उत्पादन बढ़ाने, बेहतर बीज उपलब्ध कराने और लागत घटाने के लिए लगातार कदम उठा रही है। श्री चौहान ने बताया कि जीएसटी दरों में सुधार के बाद कृषि यंत्रों पर जीएसटी 12 प्रतिशत और 18 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई है, जिससे किसानों को सीधा आर्थिक लाभ मिलेगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसल के नुकसान की भरपाई का आश्वासन दिया। उन्होंने किसानों से बातचीत करते हुए प्रमुख फसलों, उत्पादन लागत और स्थानीय खाद्य की दुकानों की आवश्यकता जैसे मुद्दे की भी जानकारी ली।

श्री चौहान ने केंद्र सरकार के दलहन आत्मनिर्भरता मिशन के तहत मसूर और चना के उत्पादन बढ़ाने की पहल से अवगत कराया और किसानों के सुझाव भी मांगे। उन्होंने बताया कि इस वर्ष केंद्र सरकार ने रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की है जिससे किसानों को लाभ होगा। विशेष रूप से गेहूं, चना, मसूर और सरसों की एमएसपी में वृद्धि की जानकारी भी दी।

इस 'ग्राम चौपाल' में बड़ी संख्या में किसान, स्वयं-सहायता समूह की दीदियां और पंचायत प्रतिनिधि उपस्थित थे, जिन्होंने केंद्रीय कृषि मंत्री से अपनी समस्याएं और सुझाव साझा किए।

इफको द्वारा केंद्रीय कृषि मंत्री का स्वागत

भोपाल (कृषक जगत)। भारत सरकार के केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के भोपाल निवास पर इफको के राज्य प्रबंधक डॉ. डी. के. सोलंकी ने मुलाकात कर केन्द्रीय कृषि मंत्री का स्वागत किया। इस दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री को इफको द्वारा प्रदेश में चलाई जा रही विभिन्न कृषक हितैषी गतिविधियों एवं नैनो उर्वरकों के उपयोग में की जा रही सेवाओं पर जानकारी दी। डॉ. सोलंकी ने केंद्रीय कृषि मंत्री को बताया इफको द्वारा किसानों के लिए समय-समय पर खेती की उन्नत जानकारी के लिए किसान संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इफको संकट हरण बीमा पॉलिसी एवं नैनो उर्वरक का उपयोग बढ़ाने के लिए प्रदेश में किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। केंद्रीय कृषि मंत्री ने इफको द्वारा की जा रही गतिविधियों को किसानों के लिए हितैषी बताया एवं इफको को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर इफको के वरिष्ठ विपणन प्रबंधक डॉ. ओमशरण तिवारी भी उपस्थित थे।

गेहूं की नई उन्नत किस्म WH-1402 लॉन्च

नई दिल्ली (कृषक जगत)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (CCSHA) ने किसानों के लिए एक नई और उन्नत गेहूं की किस्म WH-1402 लॉन्च की है, जो न केवल उच्च पैदावार और गुणवत्ता के लिए जानी जाती है, बल्कि तेजी से पकने के कारण भी किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय ने श्री संत सीड्स एलएलपी, टोहाना के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि इस नई किस्म के बीज अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे।

विशेषताएं

WH-1402 किस्म की विशेषता यह है कि यह 147 दिनों में पूरी तरह पककर तैयार

सिर्फ147 दिनों में होगी तैयार

हो जाती है। इसमें बालियां लंबी और मजबूत होती हैं, जिससे यह तेज़ हवाओं या बारिश में भी गिरने की संभावना को कम करती है। यह किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है, और इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 100 सेंटीमीटर तक होती है। इसके अलावा, इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, 77.7 किलो/ हेक्टोलिटर वजन, और लौह (37.6 पीपीएम) और जिंक (37.8 पीपीएम) जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाए जाते हैं।

बीज दर और सिंचाई

WH-1402 किस्म की बिजाई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के पहले सप्ताह के बीच की जाती है। इसकी बीज दर 100 किलो प्रति हेक्टेयर रखी गई है। यह किस्म दो बार सिंचाई की मांग करती है - पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद और दूसरी सिंचाई 80-85 दिन बाद।

किसानों को मिलेगा लाभ

WH-1402 का मुख्य उद्देश्य किसानों को उन्नत तकनीकी से अधिक पैदावार और बेहतर गुणवत्ता वाली गेहूं की फसल प्राप्त कराना है।

कुशल पशुधन प्रबंधन के लिए डिजिटल प्लेटफार्म जरूरी

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन पर कार्यशाला

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन के कार्यान्वयन में तेज़ी लाने के लिए पशुपालन एवं डेयरी सचिव श्री नरेश पाल गंगवार की अध्यक्षता में नई दिल्ली में राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (एनडीएलएम) विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें कुशल पशुधन प्रबंधन और सेवा वितरण के लिए भारत पशुधन जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों का लाभ उठाने पर विशेष बल दिया गया। पशुपालकों के बीच डिजिटल साक्षरता बढ़ाने, ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने और सभी प्रशासनिक स्तरों पर प्रभावी डेटा उपयोग करने पर विचार-विमर्श किया गया।

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन का उद्देश्य नस्ल सुधार, रोग निगरानी और उत्पाद ट्रेसबिलिटी में सहायता के लिए एक किसान-केंद्रित डिजिटल इको-सिस्टम स्थापित करना है। भारत पशुधन प्लेटफॉर्म पर 9.4 करोड़ से अधिक पशुपालक और 34.5 करोड़ पशु पहले ही पंजीकृत हो चुके हैं, जो व्यापक पशुधन डिजिटलीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

इस कार्यशाला में पशुपालन एवं डेयरी विभाग की अतिरिक्त सचिव सुश्री वर्षा जोशी, पशुपालन आयुक्त डॉ. प्रवीण मलिक, पशुपालन आयुक्त श्री राम शंकर सिन्हा और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। इस कार्यशाला में 7 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कपास उत्पादन 335 लाख गांठ होने का अनुमान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कपास उत्पादन को लेकर 2025-26 के सीजन में देश में अच्छी उम्मीदें जताई जा रही हैं। कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, इस बार कपास का उत्पादन 312 से 335 लाख गांठ के बीच रहने की संभावना है। इस अनुमान के पीछे इस साल की कपास की बुआई और शुरुआती पैदावार के आंकड़े हैं, जिनमें गुजरात और पंजाब जैसे राज्यों में अच्छी उपज का रुझान देखा गया है। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में अधिक बारिश की वजह से उत्पादन प्रभावित हुआ है। इस बार कपास की खेती लगभग 111 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हुई है, जो पिछले साल के 112.97 लाख हेक्टेयर के लगभग बराबर है।

कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने यह भी बताया कि 2025-26 सीजन के लिए शुरुआती स्टॉक 60.59 लाख गांठ रहने का अनुमान है, जो पिछले साल के 39.19 लाख गांठ की तुलना में काफी ज्यादा है। इसके पीछे मुख्य वजह बेहतर उत्पादन के साथ उच्च आयात को माना जा रहा है। हालांकि, मंडियों में नई कपास की आवक शुरू हो चुकी है, लेकिन कीमतें न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे चल रही हैं, जिससे किसानों को नुकसान का खतरा बना हुआ है।

सीएआई की रिपोर्ट

कपास उत्पादन वाले राज्यों की स्थिति

महाराष्ट्र 89.09 लाख गांठ कपास उत्पादन के साथ शीर्ष स्थान पर है, जहां खेती का क्षेत्रफल 40.86 लाख हेक्टेयर है, लेकिन यहां उपज 370.66 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से कम है। दूसरी ओर, गुजरात 23.92 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास की खेती करता है और 507.02 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की उच्च उत्पादकता के कारण

71.34 लाख गांठ उत्पादन करता है। तेलंगाना भी एक उभरता हुआ बड़ा उत्पादक राज्य है, जहां 468.04 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की अच्छी उपज के साथ लगभग 49.86 लाख गांठ कपास उत्पादन की उम्मीद है। राजस्थान में 500.24 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की मजबूत उपज के साथ 18.45 लाख गांठ उत्पादन होने का अनुमान है, जबकि मध्य प्रदेश 425.98 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की उपज के साथ 15.35 लाख गांठ कपास उत्पादन करेगा।

मुख्यमंत्री ने गोवर्धन पूजा कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने मुख्यमंत्री निवास स्थित गौशाला में गोवर्धन पूजा के अवसर पर गौमाता की पूजा-अर्चना की। उन्होंने इस अवसर पर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की मंगलकामना की। श्री साय ने कहा कि गोवर्धन पूजा हमारे जीवन में प्रकृति, अन्न और पशुधन के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। गाय भारतीय संस्कृति की आधारशिला है, जो न केवल हमारे ग्रामीण जीवन से जुड़ी है, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था और आस्था दोनों का केंद्र भी है।

धान खरीदी सहित अन्य योजनाओं के लाभ के लिए 31 अक्टूबर तक पंजीयन अनिवार्य

एग्रीस्टैक पोर्टल बनेगा किसानों की डिजिटल पहचान

रायपुर। राज्य शासन द्वारा किसानों के हित में एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। अब सभी किसानों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए एग्रीस्टैक पोर्टल पर पंजीयन कराना अनिवार्य किया गया है। सहायक आयुक्त सहकारिता ने बताया कि एग्रीस्टैक पोर्टल पर पंजीयन की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर निर्धारित की गई है, जो किसान पंजीयन से छूटे हों, वे शीघ्र ही अपना पंजीयन करा सकते हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि क्षेत्र के लिए एक डिजिटल इकोसिस्टम है, जिसे भारतीय सरकार ने विकसित किया है। जिसका उद्देश्य किसानों के लिए एक संपूर्ण डेटाबेस बनाना है, जिसमें उनकी पहचान, भूमि रिकॉर्ड, आय, ऋण, फसल की जानकारी और बीमा इतिहास के बारे में जानकारी शामिल है। एग्रीस्टैक पोर्टल पर पंजीयन कराने से किसानों को धान खरीदी सहित शासन की अन्य योजनाओं का लाभ मिलेगा।

एग्रीस्टैक पोर्टल पर पंजीयन के फायदे

एग्रीस्टैक पोर्टल पर किसान आईडी बनवाने से किसानों को धान खरीदी, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, किसान क्रेडिट कार्ड, उर्वरक अनुदान, प्रधानमंत्री किसान सिंचाई योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, कृषि मशीनीकरण योजना एवं मुख्यमंत्री किसान सहायता योजना जैसी अनेक केंद्र एवं राज्य शासन की योजनाओं का लाभ सीधे प्राप्त होगा। कलेक्टर श्री कुन्दन कुमार ने जिले के सभी किसानों से अपील की है, कि वे शीघ्रता से एग्रीस्टैक पोर्टल में पंजीयन कराएँ, ताकि किसी भी योजना का लाभ लेने में उन्हें कठिनाई न हो। उन्होंने बताया कि किसान स्वयं मोबाइल ऐप से ऑनलाइन पंजीयन कर सकते हैं। साथ ही, स्थानीय सीएससी सेंटर, सेवा सहकारी समिति एवं पटवारी कार्यालयों के माध्यम से भी निःशुल्क पंजीयन की सुविधा उपलब्ध है। साथ ही https://cgfr.agristack.gov.in/ पर भी पंजीयन किया जा सकता है।

राज्योत्सव 2025 पर विशेष लेख

कृषि पंडाल में दिखेगी राज्य में कृषि विकास के 25 वर्ष की झलक

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी स्थापना दिवस के 25 वर्ष पूरा होने पर रजत जयंती वर्ष माना रहा है। राज्य द्वारा नवीन तकनीकों एवं नवाचार को अपनाते हुए अपनी समृद्धता की ओर अग्रसर है। राज्योत्सव के अवसर पर इस बार कृषि विभाग के प्रदर्शनी में छत्तीसगढ़ में कृषि विकास के 25 वर्ष की झलक देखने को मिलेगी।

रसायन मुक्त खेती की ओर किसान

बता दें कि छत्तीसगढ़ को धान के कटोरा का रूप में पहचान मिली है, जिसमें कृषि तथा कृषि आधारित उद्योगों का प्रमुख योगदान रहा है। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कृषकों के चहुंमुखी विकास के लिए निरंतर कृषक हितैशी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। पी.एम. किसान सम्मान निधि व कृषक उन्नति योजनाओं के द्वारा कृषकों को आर्थिक लाभ एवं प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना द्वारा आकिस्मक वर्षा एवं अन्य आपदाओं से हुई फसल क्षति की प्रतिपूर्ति तथा वर्षा जल संरक्षण एवं उपलब्ध सिंचाई जल का समुचित एवं संतुलित उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा हैं। एकीकृत जल ग्रहण प्रबंधन, प्रधानमंत्री सुक्ष्म सिंचाई योजना तथा पर ड्रोप मोर कॉप जैसी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। ड्रोन दीदी अभियान चला कर उर्वरक की कमी के समाधान हेतु नैनो यूरिया एवं नैनो डी.ए.पी. के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। पी.एम. प्रणाम कार्यक्रम अंतर्गत कृषि में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने तथा जैविक खाद के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए परम्परागत कृषि विकास योजना तथा जैविक खेती के माध्यम से रसायन मुक्त खेती की ओर किसानों को प्रेरित ओर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

किसानों की आर्थिक स्थिति में वृद्धि

उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ राज्य में सहकारी समितियों के माध्यम से कृषकों को शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर कृषि ऋण मुहईया कराई जा रही है तथा कृषको द्वारा उपार्जित धान के समूचित उपार्जन तथा उचित मूल्य हेतु समर्थन मूल्य पर सहकारी समितियों के माध्यम से धान उपार्जन की व्यवस्था की गई है। यहां पर धान उपार्जन का मूल्य देश के अन्य राज्यों के तुलना में अधिक है। उपरोक्त समस्त योजनाओं एवं गतिविधियों के कारण राज्य में कृषि के स्तर एवं किसानों के आर्थिक स्थिति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, जिसमें राज्य एवं केन्द्र शासन की कृषक कल्याणकारी योजनाओं का प्रमुख योगदान है।

6727 हजार हेक्टेयर में क्षेत्राच्छादन

प्रदेश में क्षेत्राच्छादन की दृष्टि से देखा जाय तो छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना वर्ष 2000 में सम्पूर्ण फसलों का कुल क्षेत्रफल 5408 हजार हेक्टे. था। वर्तमान 2025 में 6727 हजार हेक्ट. क्षेत्रफल हो गया है, जिसमें खरीफ फसलों का क्षेत्राच्छादन 4636 हजार हेक्टेयर, जो वर्तमान में 4865 हजार हेक्ट. का क्षेत्राच्छादन विस्तारित हुआ है। धान फसल के क्षेत्राच्छादन 3795 हजार हेक्टे. से बढ़कर 3981 हजार हेक्टे., हो गया है। दलहन का क्षेत्रफल भी 238 हजार हेक्टे. से बढ़कर 260 हजार हेक्टेयर हो गया है। इसी प्रकार रबी फसलों में 772 हजार हेक्टे. से बढ़कर 1862 हजार हेक्टे. हो गया है।

खरीफ फसलों में वर्ष 2000 में 3929 हजार मे. टन उत्पादन रहा। जो 25 वर्षों में बढ़कर 12 हजार 927 हजार मे. टन पहुंचा है। इसी प्रकार रबी फसलों का वर्ष 2000 में उत्पादन 483 हजार मे. टन से बढ़कर 2775 हजार मे. टन हो गया है।

वहीं उत्पादकता वर्ष 2000 में खरीफ फसलों की औसत उत्पादकता 867 कि.ग्रा./हे. थी जो वर्ष 2025 में 2657 कि.ग्रा./हे. पहुंच गया है। इसी प्रकार रबी फसलों की औसत उत्पादकता 625 कि.ग्रा./हे. से बढ़कर 1490 कि.ग्रा./हे. प्राप्त हो रहा है।

फसल सघनता - वर्ष 2000 में फसल सघनता 112 प्रतिशत थी जो वर्ष 2025 में फसल सघनता बढ़कर 138 प्रतिशत हो गयी है।

सिंचाई विस्तार वर्ष 2000 में 1042 हजार हेक्ट. क्षेत्र सिंचाई आधारित थे जो वर्तमान में बढ़कर 1892 हजार हेक्टे. हो गया है। निरा सिंचित क्षेत्र 984 हजार हेक्टे. से बढ़कर वर्तमान में 1486 हजार हेक्टे. पहुंच गया जो कुल क्षेत्र का 32 प्रतिशत है।

40 लाख किसान परिवार कृषि से जुड़े

वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य में 32.55 लाख किसान परिवार कृषि से अजीविका अर्जित करते थे। वर्तमान में 40.11 लाख किसान परिवार कृषि से जुड़े हैं, जिसमें 24.34 लाख सीमांत, 8.80 लाख लघु एवं 6.97 लाख दीर्घ किसान परिवार सम्मलित हैं।

उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला 8 एवं मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला 36 हो गई

वर्ष 2000 में राज्य में एक उर्वरक गुण नियंत्रण एवं एक मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला संचालित थी। वर्तमान में बढ़कर उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला की संख्या 8 एवं मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला 36 हो गई है, जो कृषि आदानों के गुण नियंत्रण करते हुए कृषकों को उच्च गुणवत्ता युक्त आदान मुहैया कराने में सहायक है।

39 महाविद्यालय संचालित

इसी तरह वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य में एक कृषि विश्वविद्यालय अन्तर्गत एक महाविद्यालय संचालित थी। वर्तमान वर्ष 2025 में बढ़कर 39 (28) घटक एवं 11 संबंद्ध) कृषि, कृषि अभियांत्रिकी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय हो गये हैं।

- डॉ. ओम डहरिया,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्दिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

उत्साही मनुष्य कठिन से कठिन काम आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते। - वाल्मिकी

करोड़ों किसानों का साथी... एआई से मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम

देश के करोड़ों किसानों की आय और आजीविका का मुख्य स्रोत खरीफ की खेती होती है लेकिन इसके लिए किसान वर्षा पर निर्भर रहते हैं। यदि मानसून के बारे में किसानों को पहले से ही मौसम संबंधी पूर्व जानकारी मिल जाए तो उन्हें यह निर्णय लेने में काफी मदद मिल सकती है कि कौन सी फसल, कितनी मात्रा में और कब बोवनी करनी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस - एआई) द्वारा संचालित मौसम पूर्वानुमान में क्रांति के कारण अब यह संभव हो सका है। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा किसानों के लिए एआई की शक्ति का उपयोग किया जा रहा है। एक अनूठी सार्वजनिक पहल के तहत कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस वर्ष 13 राज्यों के लगभग 3 करोड़ 80 लाख किसानों को एसएमएस के माध्यम से एआई-आधारित मानसून पूर्वानुमान भेजे थे। एआई-आधारित मॉडलों ने किसानों की ज़रूरतों के अनुसार विशेष रूप से पूर्वानुमान तैयार करना संभव बना दिया है, जिससे किसानों को खरीफ फसल संबंधी निर्णय लेने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण मिल गया है। यह अब तक एआई मौसम पूर्वानुमानों का यह अपनी तरह का पहला सफल प्रयोग है जिससे किसानों को सीधे लाभ पहुंचाने के लिए एआई मौसम पूर्वानुमान लागू करने में विश्व-अग्रणी के रूप में स्थापित करना सम्भव हो सका है। इस वर्ष, मानसून समय से पहले आ गया था, लेकिन उत्तर की ओर बढ़ने में रुकावट आने से 20 दिनों तक बारिश रुकी रही। मंत्रालय ने एआई आधारित पूर्वानुमानों से मानसून की इस रुकावट की सटीक पहचान की। सरकार ने किसानों को हर हफ्ते अद्यतन जानकारी भेजी

एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम निरंतर वर्षा की भविष्यवाणी करने से किसानों को अधिक आत्मविश्वास के साथ कृषि गतिविधियों की योजना बनाने और जोखिमों का प्रबंधन करने में मदद मिलती है। साथ ही 'जलवायु परिवर्तन' के कारण मौसम में परिवर्तनशीलता बढ़ रही है, इसलिए पूर्वानुमान किसानों को समय के साथ तारतम्य स्थापित करने में मदद करने का एक उपयोगी साधन सिद्ध हो रहा है। भारत में वर्ष 2022 से कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रेरित एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम ने मौसम पूर्वानुमान के विज्ञान को पूरी तरह बदल दिया है और कई स्थितियों में अधिक सटीक पूर्वानुमान जारी किए हैं। इस कार्यक्रम से भारतीय मानसून जैसी जटिल घटनाओं का हफ्तों पहले पूर्वानुमान लगाने की क्षमता को और बढ़ा दिया है। मंत्रालय ने करोड़ों किसानों के हित के लिए इस क्रांति को लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम के तहत डेवलपमेंट इनोवेशन लैब - इंडिया और प्रिसिजन डेवलपमेंट की टीमों के साथ काम करते हुए मंत्रालय ने किसानों के साथ प्रत्यक्ष रूप से संवाद स्थापित किया। इस पहल से यह सुनिश्चित करने में सहायता मिली कि प्रेषित किए जाने वाले संदेश किसानों को आसानी से समझ में आ जाएं ताकि वे संदेश के अनुसार अपना कार्य आसानी से कर सकें। भारत जैसे विविध जलवायु वाले देश में एआई आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। कृषि और ग्रामीण विकास के साथ पर्यटन और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका हो सकती है। वर्तमान में भारतीय मौसम विभाग द्वारा मौसम की सटीक जानकारी दी जा रही है और इसका लाभ कृषि में भी हो रहा है। चूंकि किसान ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं और दूर-दराज के क्षेत्रों में नेटवर्क की काफी समस्या भी रहती है। इसलिए नेटवर्क की सुचारू रूप से उपलब्धता होने से आपदा के समय भी यह सेवा काफी मददगार हो सकती है। एआई आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम के बारे में भौगोलिक और भाषाई विविधता के आधार पर सभी किसानों को सूचनाएं/जानकारी देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

विकसित राष्ट्र - भारत ?

• राकेश दुबे , मो. : 9425022703

फसलों की वांछित कीमत तो मिले

यूँ तो जीएसटी सुधार एक अच्छा फैसला है, लेकिन ऐसी रियायतों के जरिए ही भारत 2047 में 'विकसित राष्ट्र' नहीं बन सकता। उसके लिए आर्थिक विकास दर कमोबेश 8-10 फीसदी होना अनिवार्य है। फिलहाल तो अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां 6.5 से 6.9 फीसदी के आकलन कर रही हैं। हम अभी बहुत दूर हैं। जीएसटी के अलावा, कानून, श्रम, भूमि, न्याय आदि कई क्षेत्रों में सुधार अनिवार्य और अपेक्षित हैं। भूमि की उपलब्धता और समानता का सुधार भी बेहद जरूरी है। किसान को सिर्फ ट्रैक्टर, थ्रेशर, सिंचाई मशीन ही नहीं चाहिए, बल्कि आर्थिक तौर पर समानता भी चाहिए। कमोबेश उसे फसलों की वांछित कीमत तो मिले। वह कर्ज के काले यथार्थ से बाहर निकल सके। 'किसान सम्मान राशि' तो 'ऊंट के मुंह में जीरा' है। यह सम्मान नहीं, खैरात है। किसान की फसलें बेहतर दाम पर बिक सकें, सरकार को यह बंदोबस्त करना ही होगा। अलबत्ता 'विकसित भारत' एक नारा, एक सपना बनकर रह जाएगा। आम आदमी इस दृष्टि से भी अपनी स्थितियों के आकलन करे। यह भी घोर, कटु सच्चाई है कि आज भी 81 करोड़ से अधिक भारतीय मुफ्त के अनाज के भरोसे हैं। आज भी सरकारी आंकड़ा मानें, तो 15-20 करोड़ भारतीय 'गरीबी रेखा' के तले जीने को अभिशप्त हैं। आज भी करीब 85 फीसदी किसान औसत स्तर पर हैं। उनके पास या तो 2-4 हेक्टेयर भूमि है अथवा वे दूसरे की जमीन पर खेती करने को विवश हैं।

कृषि की विकास दर 3 फीसदी से ज्यादा थी

देश के जीडीपी में कृषि का योगदान बढ़ना चाहिए। याद रहे कि कोरोना महामारी के दौरान भी कृषि की विकास दर 3 फीसदी से ज्यादा थी। देश ऐसे आत्मनिर्भर नहीं बन सकता कि वस्तुएं 2, 4, 10 रुपए सस्ती कर दी जाएं। देश का नागरिक कार, घर तभी खरीदने की सोच सकता है, जब उसके पास अतिरिक्त संसाधन होंगे। अभी तो आम आदमी रोजी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है। देश के मात्र 4 फीसदी लोगों की औसत आय 50,000 रुपए माहवार है। हम देश के 1 फीसदी धन्नासेठों की न तो बात कर रहे हैं और न ही हमारे विषय के पात्र मान रहे हैं। बहरहाल जीएसटी सुधार आम आदमी के लिए बड़ी राहत हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था में विस्तार हुआ

प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता के साथ-साथ 'स्वदेशी' का भी आह्वान किया है। 'स्वदेशी' आरएसएस का सैद्धांतिक मुद्दा रहा है। 'स्वदेशी जागरण मंच' उसका सहयोगी संगठन है। केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के दौरान भी 'स्वदेशी' के नारे खूब गूंजते थे, लेकिन तब भी उन आर्थिक सुधारों को स्वीकार कर उनकी निरंतरता बरकरार रखनी पड़ी, जिनका सूत्रपात पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और उनके वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने किया था। भारत ने भूमंडलीकरण और उदारीकरण को स्वीकार करते हुए शेष विश्व के लिए दरवाजे खोले थे, नतीजतन बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में प्रवेश बढ़ाना शुरू किया था। उस दौर के बाद ही भारत की अर्थव्यवस्था में विस्तार हुआ और आज हम चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। सिर्फ 'स्वदेशी' के जरिए ही 146 करोड़ से अधिक की आबादी की जरूरतों को पूरा नहीं किया जा सकता।

कच्चे माल पर 18 फीसदी जीएसटी

भारत मैन्यूफैक्चरिंग और आपूर्ति का गढ़ नहीं है। भारत में 'एप्पल' और 'सैमसंग' सरीखे विदेशी मोबाइल फोन की हम 'एसेंबलिंग' करते हैं, लेकिन दावा करते रहे हैं कि हम विश्व में दूसरे सबसे बड़े निर्माता और उत्पादक हैं। विश्व-बाजार में भारतीय ब्रॉन्ड का कौनसा मोबाइल फोन धड़ाधड़ बिक रहा है, जरा प्रधानमंत्री हमें भी बता दें। हकीकत यह है कि हमारे देश में कच्चे माल पर 18 फीसदी जीएसटी है और बने हुए सामान पर अब 5 फीसदी जीएसटी का भुगतान करना पड़ेगा। क्या गजब का विरोधाभास है?

भारत में 'चिप्स' और एक अच्छी कमीज से लेकर कच्चा माल, कारें और विमान तक 'विदेशी' हैं। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के विमान तक 'विदेशी' हैं। क्या फ्रांस के 'राफेल' और एलन मस्क की 'टेस्ला' को स्वदेशी करार दिया जा सकता है? भारत में स्वदेशी का सपना साकार करने के लिए हमारी शीर्ष कंपनियों और लघु, सूक्ष्म, कुटीर उद्योग को 'अनुसंधान और विकास' पर बजट लगाना होगा।

कम सिंचाई में अधिक लाभ देने वाली दलहनी फसल मसूर

• डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी

मसूर का दलहनी फसलों में विशेष स्थान है। वारानी क्षेत्रों में अधिकतर दलहनी फसलों के रूप में मसूर की खेती की जाती है। मसूर में 24.2 प्रतिशन प्रोटीन व कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है। मसूर का भूसा अत्यन्त पौष्टिक होता है व जानवर इसे चाव से खाते हैं इससे दूध की मात्रा बढ़ती है। देश में प्रमुख मसूर उत्पादक राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, बिहार, राजस्थान व पश्चिम बंगाल है। कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में सूखा व उकठा रोग प्रतिरोधी किस्मों का कम प्रचलन, अधिक उत्पादन व बोल्ड दाना वाली किस्मों का अभाव, कम उपजाऊ भूमि में मसूर की खेती आदि है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपयुक्त भूमि

मसूर की फसल सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है किन्तु मध्यम से मटियार दोमट मिट्टी इसके लिये उपयुक्त है। बुवाई के समय, हल्की जुताई कर खेत को समतल कर बीज की बुवाई कर खेत में पाटा लगाया जाता है ताकि नमी लम्बे समय तक खेत में बनी रहे।

बोवाई का समय व बीज की मात्रा

बारानी क्षेत्रों में अर्थात् असिंचित क्षेत्रों में बुवाई 25 सितम्बर से 15 अक्टूबर के बीच तथा सिंचाई सुविधा होने पर 15 अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। समय से बोनी करने पर 40 कि.ग्रा. बीज व देर से बुवाई करने पर 50 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर उपयोग करें। कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 2-3 से.मी. रखें। बोने से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन+थायरम की 2 ग्राम मात्रा या ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति कि. ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। उपचारित बीज को राइजोबियम व पी. एस. बी. कल्चर से निवेशित (उपचारित) करें। इस हेतु कल्चर की 8-10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज के मान से उपयोग करें।

उन्नत प्रजातियाँ

अच्छे उत्पादन के लिये आवश्यक है कि बीज शुद्ध हो और उसका अंकुरण प्रतिशत मानक स्तर से कम न हो। स्वस्थ, सुडौल व प्रमाणित बीज जिसका अंकुरण 70 प्रतिशत हो बोने हेतु उपयोग करें। मसूर की उन्नत प्रजातियाँ जे.एल.3, एल. 4717, एल. 4727, एल. 4729, आई.पी.एल. 316, आई.पी.एल. 81, आई.पी.एल. 547, आर.व्ही.एल. 11-6, आर. व्ही. एल. 31, कोटा मसूर -3, कोटा मसूर -4, के. 75 (मलिका) आदि का उपयोग करें।

पोषक तत्व प्रबंधन

दलहनी फसल होने के कारण मसूर की पोषक तत्व मांग कम रहती है। मसूर की फसल हेतु 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर देना आवश्यक है। बारानी क्षेत्रों में जहाँ वर्षा ऋतु की नमी में मसूर की बुवाई की जाती है वहाँ 10-15 कि.ग्रा. नत्रजन, 20-25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। जिन क्षेत्रों में पलेवा लगाकर बुवाई की जाती हैं वहाँ 15:30:10 के अनुपात में नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश दें एवं जहाँ पर सिंचाई की सुविधा हो वहां उर्वरकों की पूरी मात्रा उपयोग करें। उर्वरकों के उपयोग के साथ-साथ जैव उर्वरकों (राइजोवियम व पी.एस.बी.) का उपयोग भी आवश्यक है ताकि राइजोबियम द्वारा जड़ों में ग्रंथीकरण ठीक से हो सके व पी.एस.बी. द्वारा भूमि की अनुपलब्ध फास्फोरस पौधों को उपलब्ध करायी जा सके।

खरपतवार व सिंचाई प्रबंधन

मसूर की फसल हेतु अधिक मात्रा में नमी की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु फली अवस्था पर सिंचाई करने से उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मसूर की फसल व खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा अवधि 40-45 दिन है अतः बोवाई से 40-50 दिनों तक खरपतवार नियंत्रण हेतु निदाई करें।

कटाई एवं मड़ाई

जब मसूर के पौधों की पत्तियाँ की पीली पड़कर गिरने लगें तब कटाई करें। सूखी फसल की मड़ाई कर दानों को सुखाकर 10-12 प्रतिशत नमी पर भण्डारित करें।

उपज

किस्म के अनुसार बारानी क्षेत्रों में 10-12 क्विंटल व सिंचाई करने पर 18-20 क्विंटल मसूर की उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। मसूर की फसल की बारानी क्षेत्रों लागत लगभग 15000 रू. प्रति हे. व लाभ 35,000 रू. तथा सिंचाई वाले क्षेत्रों में लागत 20000 रू. व लाभ 65,000 रू. प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।

मसूर के साथ अंतरवर्तीय खेती

शरद ऋतु में बोये जाने वाले गन्ने के साथ 2:2 अनुपात में मसूर की फसल लेकर करीब 6-8 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है इससे गन्ने की फसल पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। मसूर-सरसों (8:2) अंतरवर्तीय फसल पद्धति अपनाने से मसूर में लगने वाले माहू कीट का प्रकोप कम होता है।

पौध संरक्षण

मसूर की फसल की कम उत्पादकता का एक प्रमुख कारण इसमें लगने वाला उकठा रोग व माहू कीट का प्रकोप है अतः समय पर इनका नियंत्रण कर उत्पादन में 30-40 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी की जा सकती है।

उकठा, फफूंदजनित रोग है व इससे मसूर की उपज में 30 प्रतिशत तक की कमी देखी गयी है। रोग प्रकोप से पूरा पौधा, फूल अवस्था के बाद सूख जाता है। रोग से बचाव हेतु उपयुक्त फसल चक्र अपनायें, उकठा अवरोधी जातियों की बुवाई करें व बुवाई पूर्व बीज कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन+थायरम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. के मान से उपचारित कर बोयें। ट्राईकोडर्मा अथवा माईकोराइजा की 1 से 2 किलोग्राम मात्रा को 1 क्विंटल नमी वाली गोबर की खाद में मिलाकर, छायावाली जगह में 10 से 15 दिन तक पॉलीथिन शीट से ढंककर रख दें। हर तीसरे दिन इस मिश्रण को पलटते रहें ताकि ट्राईकोडर्मा अथवा माईकोराइजा सुचारू रूप से पनप सके इस तरह यह मिश्रण (एक क्विंटल) एक एकड़ भूमि में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें।

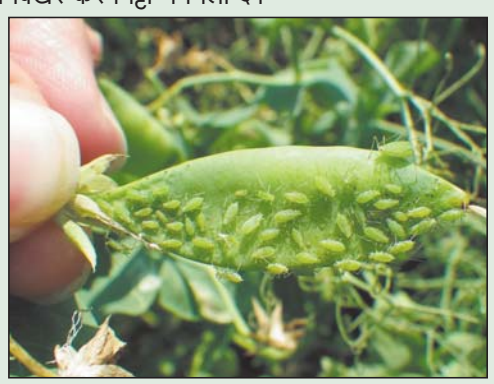

मसूर की फसल में मुख्यतः माहू कीट का प्रकोप होता है जो फसल की 45-50 दिन की अवस्था से रस चूसता है जिससे पौधे कमजोर व काले पड़कर सूख जाते हैं तथा उत्पादन में कभी कभी शत प्रतिशत तक कमी आती है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड अथवा एसिटामिप्रिड अथवा पूर्व मिश्रित कीटनाशी एसिटामिप्रिड+वाईफेनथ्रिन की 100 ग्राम मात्रा को 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

चिया की उन्नत उत्पादन तकनीक

● अनिल कुमार सिंह ● ऋचा सिंह
● अक्षता तोमर ● दिनेश कुमार सिंह
aksjnkvv01@gmail.com

उपयुक्त जलवायु

चिया को उष्णकटिबंधीय तटीय रेगिस्तान से लेकर उष्णकटिबंधीय वर्षा वाले क्षेत्रों तक विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों में 800-2,200 मीटर की ऊँचाई तक उगाया जा सकता है। चिया सर्दियों में फूलने - फलने वाला (शॉर्ट-डे फ्लावरिंग प्लांट) पौधा है जो ठंड के प्रति संवेदनशील है। इसलिये दिसंबर और जनवरी के दौरान ज्यादा ठंड का असर इस पर होता है, क्योंकि यह समय चिया में फूल आने और बालियों में दाना भरने का समय होता है। चिया के बीज का सबसे अच्छा अंकुरण 25 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीज के तापमान में होता है। चिया पादप की जीवन चक्र अवधि 120-150 दिनों के बीच होती है।

भूमि

चिया की खेती के लिए हल्की से मध्यम या रेतीली मिट्टी जो उचित प्रकार से सूखी, मध्यम उपजाऊ हो इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है, साथ ही यह पौधे अम्लीय मिट्टी और मध्यम सूखे को सहन करने में सक्षम होते हैं। बीज बोने के बाद अंकुरण के लिए नमी की आवश्यकता होती है, परंतु परिपक्वता के दौरान गीली मिट्टी चिया के लिए उपयुक्त नहीं है।

भूमि की तैयारी

मध्यम हल्की से मध्यम भारी मिट्टी जो खरपतवार मुक्त हो, चिया की उच्च पैदावार के लिए उपयुक्त होती है। कॉम्पैक्ट मिट्टी और प्रारंभिक खरपतवार फसल वृद्धि को रोकती है। मिट्टी को पूरी तरह से तैयार करने के लिए उसकी अच्छी तरह से जुताई करें। देशी खाद (एफवाईएम) 20 टन प्रति हेक्टेयर बीज बोने या प्रत्यारोपण से कुछ दिन पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिलाया जाये।

बीज दर और समय

अच्छी गुणवत्ता वाला पुर्णरूपेण परिपक्व चिया का बीज चमकदार आवरण (कोट) वाला होता है,

जो क्रीम से चारकोल भूरे गहरे अनियमित चिह्नों या धब्बों के साथ काले या सफेद रंग में होता है। भूरा फीका सफेद रंग, अपरिपक्व चिया बीज की निशानी है। पूर्ण परिपक्व बीज चमकदार गहरे रंग का होता है। इस फसल पर हुये अनुसंधान कार्यों से साबित हुआ है कि चिया की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय 5 से 15 अक्टूबर के मध्य का है।

चिया फसल में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी प्रर्याप्त है। बीज 2-3 सेमी से गहरा नहीं बोयें। आमतौर पर एक हेक्टेयर क्षेत्र में चिया की बुवाई के लिए 3 से 6 किलोग्राम बीज का उपयोग किया जाता है, जिसमें पौध उद्भव (ईमर्जेन्स) के बाद पौधों में काफी विरलीकरण (थिनिंग) करने की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई के दो सप्ताह बाद विरलीकरण करके पौधे से पौधे के बीच की दूरी 10 सेमी कर दी जाती है।

बुवाई की विधि

चिया एक मौसमी फसल है तथा बीज द्वारा

चिया (साल्विया हिस्पेनिका), लैमिएसी कुल का एक पौधा है, जिसे मुख्य रूप से इसके बीज के लिए उगाया जाता है। मानव आहार के लिए इसके बीज का उपयोग महत्वपूर्ण माना गया है। चिया के बीज में 25 से 60 प्रतिशत तेल होता है, जिसमें 60 प्रतिशत ओमेगा 3 अल्फा-लिनोलेनिक एसिड और 20 प्रतिशत ओमेगा 6 लिनोलिक एसिड होता है। मानव शरीर द्वारा अच्छे स्वास्थ्य के लिए दोनों फैटी एसिड आवश्यक हैं और उन्हें कृत्रिम रूप से संश्लेषित नहीं किया जा सकता है। चिया के बीजों के अनेकों लाभ हैं, चिया के बीज स्वस्थ त्वचा के लिए, बढ़ती उम्र के प्रभाव को कम करना, हृदय और पाचन तंत्र को बेहतर करना, मजबूत हड्डियों और मांसपेशियों का निर्माण करने में सहायक होते हैं। यह मधुमेह को कम करने के लिए भी सहायक माने जाते हैं। चिया की खेती ऑस्ट्रेलिया, बोलीविया, कोलंबिया, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, पेरू और अर्जेंटीना में की जाती है। भारत में चिया की खेती मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में की जाती है।

लगाई जाती है। सीधे बीज बोने, नर्सरी द्वारा और मुख्य क्षेत्र में प्रत्यारोपण द्वारा फसल लगाई जाती है। प्रति हेक्टेयर के लिए 3 से 6 किलोग्राम की सामान्य बुवाई दर और 30 सेंटीमीटर की पंक्ति से पंक्ति एवं 10 सेंटीमीटर की दूरी पौधे से पौधे के बीच उपयुक्त होती है।

यदि कृषक बंधु नर्सरी द्वारा खेती करना चाहते हैं, तो अच्छी प्रकार से तैयार खेत में वांक्षित आकार की उठी हुई क्यारी बना लें। चिया के बीज आकार में छोटे होते हैं इसलिए क्यारी की मिट्टी भुरभरी और समतल कर लें। चिया के 100 ग्राम बीज को 1 किलो सूखी मिट्टी के साथ मिलाकर तैयार क्यारी में एकसार बोने के उपरांत बारीक वर्मी कम्पोस्ट या मिट्टी से ढंक कर हल्की सिंचाई करें। क्यारी में नियमित रूप से झारे की मदद से हल्की सिंचाई करते रहें जिससे क्यारी की मिट्टी नम बनी रहे। पौध रोपण हेतु खेत की भली-भांति साफ-सफाई करने के पश्चात जुताई कर भुरभुरा और समतल कर लें। अब खेत में 30 सेमी की दूरी पर कतारें बनाकर पौध से पौध 10 सेमी का फांसला रखते हुए पौधे रोपें। शीत ऋतु में कतार से कतार 30 सेमी और पौधे से पौधे के मध्य 10 से 20 सेमी की दूरी रखना उचित पाया गया है, क्योंकि ठंड के मौसम में पौध बढ़वार कम होती है।

चिया पौध रोपण के तुरंत बाद खेत में हल्की सिंचाई करना अनिवार्य होती है ताकि पौधे सुगमता से स्थापित हो सकें। भूमि में नमी के स्तर और मौसम के अनुसार 8-10 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करते रहें।

खाद और उर्वरक

भारत में एक नई फसल होने के कारण, चिया की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को अभी मानकीकरण हेतु परीक्षित किया जा रहा है, अच्छे पौष्टिक उत्पादन के लिए चिया की जैविक खेती करना बेहतर रहता है। इसमें पोषण की आवश्यकता को पूरा करने लिए अच्छी तरह से सड़ी हुई 15-20 टन गोबर की खाद को खेत की तैयारी से पूर्व देना लाभदायक रहता है।

हल्की मृदा में पौधों की आवश्यक वृद्धि के लिये 30 किलोग्राम नत्रजन, 23 किलोग्राम फास्फोरस और 15 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय देना लाभदायक रहता है। आवश्यकता होने पर बुवाई के 30-45 दिनों के भीतर 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की मात्रा टॉप ड्रेसिंग के रूप में दी जा सकती है।

सिंचाई प्रबंधन

चिया बीज के अंकुर की स्थापना के लिए बुवाई के समय मृदा नमी की पर्याप्त मात्रा आवश्यक है। चिया में सिंचाईयों की संख्या मृदा के प्रकार और तापमान पर निर्भर करती है, हालाँकि, आमतौर पर रेतीली या रेतीली दोमट मिट्टी में बुवाई के बाद 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। बुवाई के तुरन्त बाद सिंचाई कर दें ताकि बीजों का अंकुरण शुरू हो जाय अन्यथा बीजों को चीटियां ले जा सकती हैं। बुवाई के 7-8 दिन बाद एक हल्की सिंचाई दें ताकि बीजाकुंरण संपूर्ण हो जाये। तत्पश्चात 12-15 दिनों के अंतराल से 4 सिंचाईयां दें। यह फसल परिपक्वता अवस्था के दौरान अत्यधिक नमी के प्रति अतिसंवेदनशील होती है, अतः फसल परिपक्वता के समय सूखा वातावरण लाभदायक रहता है।

खरपतवार नियंत्रण

चिया एक बहुशाखाओं वाली फसल है, इसलिए खरपतवारों से यह बहुत अधिक प्रभावित नहीं होती है, लेकिन इसके प्रारंभिक विकास अवस्था के दौरान खरपतवार प्रबंधन करना अति आवश्यक होता है, इसके लिये बुवाई के 25-30 दिनों बाद हाथ से खरपतवार नियंत्रण करना कारगर रहता है।

चिया की फसल में पादप संरक्षण

चिया एक ऐसा पौधा है, जिसे न तो कीटों से और न ही बीमारियों से कोई समस्या उत्पन्न होती है। हालांकि,परिपक्वता अवस्था के दौरान इसकी बालियों पर चींटियों का प्रकोप देखा गया है, जिसके नियंत्रण के लिये खेत के चारों तरफ किसी कीटनाशी पाउडर की रेखा बनाकर प्रयोग किया जा सकता है। चिया की फसल पर पाले का प्रभाव भी देखा गया है, जिससे कोमल पत्तियां व उभरती हुई बालियां काली पड़ जाती हैं। पाले से प्रभावित फसल में बीज पूरी तरह से भराव नहीं कर पाते है, जिससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। दिसंबर और जनवरी के महीनों में यह फसल ठंड के प्रति संवेदनशील होती है। अतः इस दौरान पाला पड़ने की संभावना से पूर्व हल्की सतही सिंचाई करके मिट्टी के तापमान को बनाये रखा जा सकता है, तथा फसल को ठंड के कारण होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

कटाई, थ्रेसिंग और भंडारण

चिया की फसल 120-130 दिनों में परिपक्व हो जाती है। परिपक्व अवस्था में इसकी सारी पत्तियां झड़ जाती है तथा तने पर सिर्फ बालियां रह जाती हैं। चिया की फसल को दरांती से काटा जा सकता है और थ्रेसिंग के लिए बालियों को लकड़ी की डंडियों से दबाकर या कूटकर बीजों को अलग कर दिया जाता है तथा साजड़े (घरेलू उपकरण) से उफान कर बीजों को बिल्कुल साफकर लिया जाता है। इस प्रकार साफ और शुष्क (8 प्रतिशत तक नमीयुक्त) बीजों को 3-4 महीने तक सामान्य तौर पर संग्रहीत किया जा सकता है। आजकल छोटे स्कीन का उपयोग करके मानक थ्रेसर में थोड़ा संयोजन करके चिया फसल की थ्रेसिंग की जा सकती है।

उपज

रबी मौसम में चिया की 6-9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज की उपज प्राप्त की जा सकती है।

औषधीय गुण

- चिया के बीज में प्रोटीन, वसा, खनिज लवण और विटामिंस प्रचुर मात्रा में विद्यमान होते हैं जिसके कारण इसके सेवन से मांसपेशियां, मस्तिष्क कोशिकाएं और तंत्रिका तंत्र मजबूत होता है।
- चिया के बीजों में एंटी ऑक्सिडेंट्स पर्याप्त मात्रा में होते हैं, जो शरीर से फ्री रैडिकल्स को बाहर निकलने में मदद करता है, जिससे हृदय रोग और कैंसर रोग से बचा जा सकता है।
- चिया के बीजों में ओमेगा- 3 और ओमेगा- 6 फैटी एसिड पाया जाता है, जो हृदय रोग और कोलेस्ट्रॉल की समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित होता है।
- चिया के बीजों के नियमित सेवन करने से शरीर में सूजन की समस्या से निजात मिलती है।
- चिया के बीज भूख शांत करने और वजन घटाने में कारगर साबित हो रहे हैं।
- चिया के बीज का सेवन करने से शरीर में 18 प्रतिशत कैल्शियम की कमी पूरी होती है, जोकि दांत और हड्डियों को मजबूती प्रदान करने में मददगार होती है।
- शरीर की त्वचा को कांतिमय बनाने के लिए इसका नियमित सेवन अत्यंत लाभकारी बताया जा रहा है।
- पाचन तंत्र को सुधारने और मधुमेह रोगियों के लिए भी उपयोगी खाद्य है।

नेवला : खेतों का साहसी मित्र

• डॉ. दीपक हरि रानडे • डॉ. मनोज कुमार कुरील
• डॉ. स्मिता अग्रवाल

नेवला, जिसे कुछ जगहों पर मुर्गल या नखला भी कहते हैं, भारत के कई हिस्सों में पाया जाता है। यह छोटा, मगर निडर जीव अपने खेतों और आसपास के पर्यावरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि महाविद्यालय, खंडवा का परिसर केवल पौधों की विविधता के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहाँ जीव-जंतुओं की विविधता भी खूब है। इसी परिसर में नेवला भी देखा जाता है। खेतों में इसकी मौजूदगी न केवल फसलों की रक्षा करती है, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में भी मदद करती है।

कृषि में उपयोगिता

नेवला खेतों के लिए एक छोटे, पर बहुत महत्वपूर्ण रक्षक की तरह है। यह चूहों, छोटे कीट और कभी-कभी साँपों का शिकार करता है। इससे फसलों को नुकसान नहीं होता और किसानों को प्राकृतिक सुरक्षा मिलती है। उसकी उपस्थिति खेतों में रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता भी कम करती है, जिससे मिट्टी और

पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहते हैं।

पारिस्थितिकी में योगदान

नेवला खेतों में जैविक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह खुद कुछ बड़े शिकारी जीवों के लिए भोजन बनता है और छोटे कीटों की संख्या को नियंत्रित करता है। इसके शिकार से पैदा होने वाला जैविक कचरा मिट्टी की उर्वरता को भी बढ़ाता है।

शत्रु और शिकार

नेवले के प्राकृतिक शत्रु बड़े पक्षी जैसे बाज और उल्लू, कभी-कभी लोमड़ी या कुत्ते होते हैं। इसके शिकार में छोटे कीट, रॉडेंट्स और कभी-कभी पक्षियों के अंडे शामिल होते हैं। यही कारण है कि नेवला खेतों में संतुलन बनाए रखने वाला एक कुशल रक्षक कहलाता है।

रोचक बातें

नेवला छोटे आकार का होते हुए भी बहुत तेज और चतुर है। यह विषैले साँपों से भी लड़ सकता है। बुंदेलखंड और मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में इसे नखला कहा जाता है। कभी-कभी लोग इसे 'छोटा सर्प भक्षक' भी कहते हैं। खेतों में इसकी मौजूदगी यह बताती है कि वहां जैविक संतुलन और प्राकृतिक रक्षा अच्छी तरह काम कर रही है। इनके संरक्षण के लिए और शोध की आवश्यकता है, ताकि इनके आवास और व्यवहार को समझा जा सके और संरक्षण प्रयासों को प्रभावी बनाया जा सके।

निष्कर्ष

नेवला खेतों का एक निडर और भरोसेमंद मित्र है। यह फसलों की रक्षा करता है, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखता है और प्राकृतिक संतुलन में मदद करता है। कृषि महाविद्यालय, खंडवा जैसे स्थानों में इसकी उपस्थिति जैव विविधता की पुष्टि करती है और यह दिखाती है कि इसे संरक्षण की आवश्यकता है।

बकरियों का पौष्टिक आहार

बकरी एक रोमंथी पशु हैं। उसके खानपान की आदतें अन्य पशुओं से भिन्न होती हैं। वह खोजी स्वभाव की होती हैं अतः जंगल में चराई हेतु भेजने पर दौड़ती रहती हैं। उसे घांस के मुकाबले पेड़ तथा खंखाड की पत्तियां खाना ज्यादा पसंद होता है। चराई के दौरान वह एक वनस्पति के पास जाकर कुछ पत्तियां खींचकर मुंह में भर लेती हैं लेकिन कुछ ही समय पश्चात दूसरे वनस्पति की और दौड़ पड़ती हैं और वहां जाकर उस पर कुछ देर मुंह मारती हैं। वह बहुत ही चंचल स्वभाव की होती हैं। अगर उसे कुछ दूरी पर किसी अन्य वनस्पति पर चंद अन्य बकरियां चरती हुई नजर आये तो वह भी उस वनस्पति की और दौड़ पड़ती है तथा जल्दबाजी में उस पर चराई शुरु कर देती हैं। फिर कुछ ही मिनटों या यहां तक की पलों में उसका उस वनस्पति से दिल भर गया तो अन्य वनस्पति की ओर दौड़ पड़ती हैं।

जिद्दी स्वभाव

जो वनस्पति उसे पसंद आ जाती है उसे वह कुछ ज्यादा देर तक खाती है। लेकिन इसका भी कोई भरोसा नहीं । वह जिद्दी स्वभाव धारी पशु हैं। अतः उसका दिल करें तो वह एक विशिष्ट वनस्पति पर चराई करेगी तथा जिस पल उसका दिल उस वनस्पति से भर जाये तब दूसरी वनस्पति की ओर चल देती है।

झुंड में रहना

बकरियां अक्सर झुंड में रहना तथा झुंड में रहकर साथ-साथ चरना पसंद करती हैं। उन्हे अकेले रहना कतई पसंद नहीं होता। अगर किसी ने ऐसी कोशिश की तो वह मायूस होकर, सहमकर या तो खड़ी रहती हैं या जमीन पर बैठ भी सकती हैं तथा चराई बंद कर देती है। कई बार वह भूखी होते हुए भी चराई नहीं करती है। उसे खेत में वनस्पतियों से भरे मैदान में अकेले बांधकर रखें भी तो वह ऐसा ही बर्ताव दर्शाती हैं। उन्हें झुंड से अलग करने पर वह बेचैन हो जाती है तथा उनके गले में रस्सी बांधकर उन्हे अन्य जगह ले जाने का प्रयास करें तो वे डर जाती हैं तथा सहमकर बैठ जाती है। कई बार इधर-उधर भागने की कोशिश करती हैं तथा नाकामयाब होने पर मायूस होकर एक जगह हताश होकर बैठ

जाती हैं।

मर्जी की मालिक

ऐसी स्थिति में उन्हें कोई कुछ खिलाना भी चाहे तो वह उसे नहीं खाती। यहां तक कि उनकी मनपसंद पत्तियां भी खाने हेतु पेश की जाये तो भी वह उसे नहीं खाती। उन्हें जबरदस्ती चारा नहीं खिलाया जा सकता । वे अपनी मर्जी की मालिक होती है। उनके सामने किसी बर्तन में खाने योग्य पत्तियां डालने पर भी वह उसे नहीं छूती। अगर कोई पत्तियां या चारा जमीन पर गिर जाये तो वह उसे नहीं छूती। उसे गीला, मटमैला, कीचड़ भरा चारा कतई पसंद नहीं होता। उन्हे वही-वही चारा पसंद नहीं होता।

उन्हे खाने में हमेशा बदलाव पसंद है। एक बार उन्होने कोई विशिष्ट चारा ग्रहण किया तो अगली बार यह जरुरी नहीं कि वह चारा दुबारा खाएगी। यहां तक कि एक बकरी को जो चारा पसंद आये वह दूसरी बकरी को पसंद आ जायेगा। हर एक की पसंद अलग-अलग होती है।

बकरी एक रोमंथी पशु है। उसके खानपान की आदतें अन्य पशुओं से भिन्न होती हैं। वह खोजी स्वभाव की होती है अतः जंगल में चराई हेतु भेजने पर दौड़ती रहती है। उसे घांस के मुकाबले पेड़ तथा खंखाड़ की पत्तियां खाना ज्यादा पसंद होता है।

जोधपुर में शोध

केंद्रीय मरु अनुसंधान संस्थान जोधपुर के तहत कार्यरत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, पाली मारवाड़ राजस्थान मे किए गए अध्ययन में ज्ञात हुआ कि गर्मियों में जब चरागाह में कोई चारा या घांस उपलब्ध नहीं होता तब जो भी चारा मिले उसे मारवाड़ी नस्ल की बकरियां खा लेती हैं। यहां तक की भूखी होने पर बाड़ में लगी बेर की सूखी कंटीली टहनियां भी खा जाती हैं । जनवरी तथा फरवरी माह में जब चारागाह में काफी हरी वनस्पतियां मौजूद होती हैं। तब उनके खानपान-व्यवहार का गहन अध्ययन करते हुए ज्ञात हुआ कि मारवाड़ी बकरियों ने सबसे ज्यादा यानि बेरी के खंखाड़ों पर 55.79 प्रतिशत समय बिताया और उसकी पत्तियां खाई। इसके बाद उनकी दूसरी पसंद खेजड़ी की पत्तियां थीं जिस पर उन्होंने 24.30 प्रतिशत समय बिताया। इसके बाद उनकी तीसरी पसंद जिजनी नामक कंटीली फलीधारी वनस्पति थी जिस पर उन्होंने 5.69 प्रतिशत समय बिताया। इसके बाद उन्होंने रोहिडा वनस्पति पर 4.59 प्रतिशत, कैर वनस्पति पर, 4.50 प्रतिशत तथा देशी बबूल की पत्तियों पर 1.99 प्रतिशत समय बिताया।

बकरियों की कुछ शारीरिक विशेषताएं होती हैं। वे छरहरी पतली, तथा हल्के शरीरधारी होती हैं। वे तेज दौड़ सकती है तथा पिछले दो पैरों पर खड़ी होकर ऊंचाई पर स्थित वनस्पति की चराई कर सकती है।

उनके ऊपरी होंठ में एक दरार होती है तथा जीभ लंबी होती है जिनकी मदद से वह छोटे से छोटा पत्ता भी पकड़कर आसानी से खा सकती है। वह हमेशा जल्दबाजी में चरती है तथा कुछ देर पश्चात पेट भरने पर किसी पेड़ की छाया में आराम से बैठकर जुगाली करती हैं। बकरियों के खानपान व्यवहार पर कुछ अनुसंधान हुआ है जिनके शोध परिणामों पर आधारित जानकारी अनुसार उन्हें कुछ वनस्पतियां जैसे बेर, खेजड़ी, जिजनी, रोहिड़ा, देशी बबूल, जंगल जलेबी, आडू, पीपल, करंज गिरीपुष्प, सावरी, अशोक, इमली, चिंचबिलाई आदि वनस्पतियों की पत्तियां खाना पसंद करती हैं। इसके अलावा उन्हे बेर के फल (बेरियां), बबूल की फलियां, खेजड़ी की फलियां, कैर के फल, रोहिड़ा के फूल आदि खाना पसंद हैं। इसके अलावा उन्हे स्वादिष्ट, रसीली, हरीभरी घांस जैसे बरसीम, लूसर्न, चौलाई तथा स्वादिष्ट अनाज खाना पसंद होता हैं। अतः उन्हें उपरोक्त लिखित वनस्पतियों की पत्तियां, फूल, फल तथा घासफूस जो भी पसंद हैं वह खिलाये जायें तो उनका चारागृहण तथा शुष्क पदार्थो का ग्रहण ज्यादा होगा।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या –समाधान

समस्या – मैं आपका नियमित सदस्य हूं, अरहर लगाई है 3–4 सालों बाद सफलता से बेहन लगा पाया हूं क्या इसमें सल्फर का स्प्रे किया जा सकता है?

– देवराज सिंह

समाधान– *आप अरहर की काश्त बेहन लगाकर करते हैं। उ.प्र. में शायद इसमें सफलता मिलती है हमारे यहां अरहर में बेहन का चलन प्रायः नहीं है। आपने सल्फर खाद के छिड़काव के विषय में पूछा है आपसे निवेदन है कि आप बाजार में उपलब्ध 19:19:19 नत्रजन–स्फुर–पोटाश या 20:20:20 का मिश्रण जो कि 1 किलो के पैकेट में आता है इसको घोल बनाकर छिड़काव करना अधिक लाभदायक होगा। एक किलो के पैकेट को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव एक बीघा में करें। जहां तक सिंचाई का प्रश्न है हल्की सिंचाई की जा सकती है। बशर्ते वर्तमान में पूर्वी उ.प्र. में आये हुदहुद के प्रभाव से वर्षा ना हुई हो तो अरहर को अतिरिक्त सिंचाई से हानि संभव है इसकी जड़ें लंबी होती हैं जो भूमिगत नमी को खींचने में कामयाब होती हैं।*

समस्या – मैंने संतरे का बगीचा लगाया है। एक वर्ष के पौध में कुछ सूख गये हैं, बाकी में पत्तियों पर पीलापन आ रहा है, उपाय बतायें।

–विनीत स्वामी

समाधान– *वर्तमान में प्रदेश में संतरा तथा*

अनार की ओर कृषकों का स्थान बढ़ रहा है। आपने एक वर्ष के पौधों में रखरखाव नहीं की यह उचित नहीं है, आप निम्न उपाय करें।

- *प्रत्येक पौधों में थाला बनाकर 10 किलो गोबर खाद, 250 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश डालें।*
- *कटाई/छंटाई करके तीन फीट से पौधे की शाखायें हटा दें।*
- *एक छिड़काव कापर सल्फेट 1 किलो, जिंक सल्फेट 1 किलो तथा चूना 1 किलो को अलग–अलग घोल बनाकर 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।*
- *तनों पर चूना अथवा बोर्डोपेस्ट का लेप लगाये।*
- *फल वृक्षों में नर्सरी से पौधे लाकर खेत में लगाते समय क्लोरोपायरीफास 5 ग्राम/गड्ढे डालें।*
- *प्रथम वर्ष में लगे पौध शत–प्रतिशत नहीं बढ़ पाते हैं। 10 प्रतिशत पौध प्राकृतिक रूप से सूख सकता है।*

समस्या– शरदकालीन गन्ना लगाना चाहता हूं, अच्छे उत्पादन के लिये प्रमुख कार्य बतायें।

– झुमकलाल पटेल

समाधान– *गन्ना एक लम्बी अवधि वाली फसल है इसलिये भूमि की तैयारी अच्छी तरह करें। आप निम्न बिंदुओं को अपनाकर अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।*

- *पहली जुताई अच्छे से की जाये इसके बाद हल से गहरी जुताई भी करें तथा रोटावेटर से मिट्टी भुरभुरी करें।*
- *3–3 फीट पर नालियां बनायें नाली 6–7 इंच गहरी हों।*
- *20 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से बीज डालें प्रत्येक गड्ढे में दो आंख से अधिक ना हो।*
- *टुकड़ों को क्लोरोपायरीफास 2 मि.ली. तथा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर के हिसाब से 50 लीटर पानी में डालकर घोल बनाकर 15 मिनट तक डुबोकर रखें।*
- *उपयुक्त जातियों में को.जे.64, को 94012, को. 86032, व्ही.एस. आई. 434, को.जे. 85 एवं को.सी. 671 लगाये।*
- *650 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 150 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश/हेक्टर की दर से डालें।*
- *सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति हेतु 25 किलो जिंक सल्फेट 25 किलो फेरस सल्फेट तथा 25 किलो मैग्नेशियम सल्फेट/हे.की दर डालें।*
- *नाली बनाने के बाद 100 क्विंटल गोबर खाद, 10 किलो एन्डोकाईमोरोजा तथा 7 किलो असीटोबेक्टर/एकड़ की दर से भी डालें।*

समस्या– सिंचित तथा अर्धसिंचित गेहूं में कब–कब सिंचाई देना चाहिये ताकि लाभ मिल सके।

– गुलाब सिंह

समाधान– *गेहूं में प्रमुख रूप से 6 सिंचाई विभिन्न क्रांतिक अवस्था में देना होता है उपलब्ध जल के हिसाब से निम्न उपाय करें।*

- *यदि 6 सिंचाई उपलब्ध है तो पहली सिंचाई बुआई के 21–24 दिनों बाद, दूसरी सिंचाई कल्ले निकलते समय, बुआई के 40 दिनों बाद, तीसरी सिंचाई फूल की स्थिति में 60–65 दिनों बाद, चौथी सिंचाई 75 से 80 दिनों बाद गभोट अवस्था में, पांचवी सिंचाई दानों में दूध भरने के बाद 105 दिनों बाद, छटवीं सिंचाई यदि आवश्यकता हो तो 110–155 दिनों बाद।*
- *यदि एक पानी हो तो बुआई के 21–24 दिनों बाद किरीट अवस्था में तथा दूसरी गभोट अवस्था में। यदि तीन सिंचाई उपलब्ध हो तो पहली किरीट अवस्था में दूसरी गभोट अवस्था में तथा तीसरी दानों में दूध भरते समय दी जाये।*

समस्या– फसल में बोने के समय सल्फर मिलाकर बोयें या तरल सल्फर छिड़काव करें क्या सल्फर से पैदावार बढ़ती है, कितना सल्फर डालें।

– प्रकाशचन्द माली

समाधान– *आपका प्रश्न सामयिक है प्रति उत्तर से अन्य कृषकों को भी लाभ मिल सकेगा। पहली बात तो यह है किसी भी प्रकार के उर्वरक को बीज के साथ मिलाकर कदापि बोनी ना की जाये। जहां तक गंधक के उपयोग का सवाल है मिट्टी की जांच के उपरांत ही यदि आपकी भूमि में इसकी कमी हो तो ही इसका उपयोग करें वैसे यदि स्फुर (फास्फेट) खाद में आप सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग करते हैं तो प्राकृतिक रूप से गंधक की पूर्ति हो जायेगी। उर्वरक में 11 प्रतिशत गंधक उपलब्ध रहता है। यदि अलग से उपयोग करना चाहें तो तिलहनी– दलहनी फसलों में 15–20 किलो गंधक/हे. की दर से बुआई पूर्व भूमि में मिलाकर किया जा सकता है।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या–समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

स्वास्थ्य/शिक्षण

आ गया मौसम सेहतमंद होने का

ठंड ने दस्तक दे दी है। जो इन दिनों अपनी सेहत बनाना चाहते हैं उनके लिए पेश है कुछ आसान से स्वादिष्ट नुस्खे ताकि गुलाबी मौसम में उनका रंग-रूप निखर उठे।

- रोजाना 10-12 गिलास पानी पीना चाहिए, साथ ही नाश्ते के रूप में ऐसे पदार्थ लें, जिसमें प्रत्येक से 200 कैलोरी प्राप्त हो। नाश्ते में खड़ा अनाज उगाकर लें, चोकर से बना केक खाएं, चोकर में मेग्निशियम पर्याप्त होता है।
- आलू के दो पराठे के साथ लगभग 50 ग्राम दही का सेवन करें, यह ऊर्जा का अच्छा स्रोत है।
- आप चाहें तो उबला अंडा काली मिर्च भुरककर सेवन करें, अंडे के सफेद भाग में प्रोटीन भरपूर होता है और पीले भाग में अतिरिक्त विटामिन- बी होता है।
- एक मुट्ठी मूंगफली के दाने सेंककर, 10 ग्राम गुड़ के साथ-चबा-चबाकर नाश्ते के तौर पर सेवन करें, ये ऊर्जा का पर्याप्त भंडार हैं।
- अत: आप नाश्ते में कुछ भी मनमर्जी का न खाएं। खाएं तो ऐसी चीज खाएं, जिससे आपको एनर्जी मिले और पेट तथा आंतें भी कष्ट महसूस न करें।
- घी, छिलका सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शक्कर (बूरा) तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बाँध लें। प्रात: खाली पेट एक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा कुनकुना दूध घूंट-घूंट करके पीने से पुरूषों का शरीर सुझौल और बलवान बनता है।
- चना व गेहूं 11 किलो मिलाकर पिसवा लें और आटे को छाने बिना ही प्रयोग करें। 250 ग्राम आटे में घी का मोयन देकर इसमें कोई भी मनपसंद सब्जी बारीक-बारीक काटकर डालें, थोड़ा सा नमक, अजवायन और बारीक कटा हुआ प्याज वगैरह डालकर आटा गूँथ लें। इसकी मोटी-मोटी रोटी तवे पर ही घुमा-घुमाकर पकाएँ। अब इसमें कोंचा मारकर घी डालें और घी से तर-बतर करके खूब चबा-चबाकर गुड़ या किसी भी सब्जी के साथ खाएँ। यह बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक रोटी है, जिसकी पौष्टिकता का एक प्रमुख तत्व शुद्ध घी है। कोलेस्ट्रॉल के रोगी को घी के इन नुस्खों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

दस का दम, स्वस्थ रहें हम

- हर समय ताजा भोजन करें।
- एक निश्चित समय पर भोजन करें.
- अनियमित और बासी भोजन से दूर रहें।
- पानी ज्यादा से ज्यादा पिएं।
- रात का भोजन सोने से तीन घंटे पहले करें।
- खाना खाने के बाद 10 मिनट तक वज्रासन में बैठें।
- भोजन से पहले व तुरंत बाद पानी पीना हानिकारक है।
- गरिष्ठ तले, मसालेदार, खटाईयुक्त भोजन से परहेज करें।
- अंकुरित अन्न, सलाद, सूप का समावेश भोजन व नाश्ते में अवश्य करें।
- केक, पेस्ट्री, आइस्क्रीम, डिब्बाबंद भोज्य पदार्थों का सेवन कम से कम करें।

ठंड के चार साथी मूंगफली, तिल, खजूर और गुड़

मूँगफली *– आयुर्वेद की मान्यता है कि मूँगफली का तेल गुणों में जैतून के तेल के समान होता है। मूँगफली का तेल मूंगफली – आपकी पाचनशक्ति बढ़ाता है। यह घावों को भरने और चेहरे की चमक बढ़ाने में भी सहायक होता है। मूँगफली में तेल, प्रोटीन, विटामिन बी–1, बी–2 और विटामिन–ई प्रचुरता में उपलब्ध होते हैं। मूँगफली बरफी बनाकर इसे आसानी से अपने भोजन में शामिल कर सकते हैं। मूँगफली बरफी*

बनाना आसान है। इसके लिए 500 ग्राम मूँगफली लेकर इसे घी में तल लें। 1 किलोग्राम गुड़ लेकर इसे कड़ाही में गर्म करके पिघला लें। गुड़ में पिसी हुई 200 ग्राम सौंफ डाल दें तथा मूँगफली की गिरियों को इसमें मिला दें।

तिल *– तिल के तेल की मालिश त्वचा का रूखापन दूर करती है। 10–20 ग्राम काले तिल चबाकर ठंडा पानी पीने से दाँतों की नैसर्गिक चमक बरकरार रहती है। 10 ग्राम काले तिल को पानी के साथ पीसकर*

इसमें एक चम्मच मक्खन मिलाकर चाटने से खूनी बवासीर (पाइल्स) से होने वाला रक्त–स्त्राव बंद हो जाता है। चाहें तो इसमें मिश्री भी मिला सकते हैं। सुबह–शाम यह प्रयोग करें। सर्दियों में छोटे बच्चों में बिस्तर गीला करने की समस्या बढ़ जाती है। इसके निदान के लिए 100 ग्राम काले तिल व 50 ग्राम अजवाइन को 200 ग्राम गुड़ में मिलाकर खिलाएँ।

खजूर *–आयुर्वेद का मानना है कि खजूर हृदय को असीम शक्ति प्रदान करता है। पूरे शरीर में होने वाली जलन को भी यह दूर करता है। यह चिकना और पचने में*

भारी होता है। खजूर के सेवन से दमे के रोगियों के फेफड़ों से बलगम आसानी से निकल जाता है। यह लीवर को भी शक्ति प्रदान करता है। यह शरीर में रक्त–वृद्धि करता है। लकवा और सीने के दर्द की शिकायत को दूर करने में भी खजूर सहायक होता है।

गुड़ *–आयुर्वेद के मतानुसार गुड़ क्षारीय, भारी व स्निग्ध होता है। ठंड में यह शक्तिवर्धक है और मूत्र की रुकावटों को दूर*

करता है। गुड़ जितना पुराना हो उतना अधिक गुणों से युक्त होता है। गुड़ में पाया जाने वाला क्षारीय गुण रक्त की अम्लता को दूर करता है। मेहनतकश एवं खिलाड़ियों के लिए तो यह किसी वरदान से कम नहीं है। भोजन के बाद गुड़ खाना सेहत के लिए लाभकारी होता है। सोंठ या सूखी अदरक के साथ गुड़ का सेवन लाभकारी होता है। ठंड में काले तिल में पुराना गुड़ मिलाकर बनाए लड्डुओं का सेवन दमा, जुकाम जैसी श्वसन तंत्र की बीमारियों में राहत दिलाता है।

साग–सब्जियों में छिपा अच्छी सेहत का राज

मामूली समझ दरकिनार कर दी जाने वाली साग–सब्जियों को वैज्ञानिकों ने ज्यादा सेहतमंद करार दिया है। ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पॉलीमाउथ और इंस्टीट्यूट ऑफ फूड, ब्रेन एंड बिहैवियर के वैज्ञानिकों के अनुसार, 19वीं सदी में लोग सामान्य साग–सब्जियों व फलों का ज्यादा इस्तेमाल करते थे। इससे वे सेहतमंद रहते थे क्योंकि इनमें शरीर के लिये सभी आवश्यक तत्व पाए जाते हैं।

19वीं सदी का आहार आज भी कारगर

- पांच हजार कैलोरी रोजाना ग्रहण करने के बावजूद लोगों की पाचनशक्ति रहती थी दुरूस्त
- साग, प्याज, गोभी, चुकंदर, जलकुंभी जैसी सब्जियां व सेब, चेरी जैसे फल खाते थे लोग।
- मछली और मांस भी उल्लेखनीय मात्रा में भोजन में शामिल थे, जो बेहद पोषक होते हैं।

धूम्रपान से परहेज

- खेतों और कारखानों में कामगार लोग धूम्रपान और शराब से परहेज करते थे।
- शकरकंद जैसे कंदमूल का इस्तेमाल करने से प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक रहती थी।
- यीस्ट युक्त ब्रेड खाने से भी लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मिलती थी मजबूती।

इलाज की कम जरूरत

व्यक्ति अपने जीवन का करीब एक दशक इलाज के भरोसे गुजारता है। पुरूष में यह आंकड़ा 7.7 वर्ष व महिला के लिये 10 साल है। पर राबॉथम का मानना है कि 19 वीं सदी में लोग ज्यादा सेहतमंद होते थे। क्योंकि उनके खानपान में हरी सब्जियां, फल व मांस शामिल होता था।

पाक्षिक पंचांग

27 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक शुक्ल 6 से आगहन कृष्ण 4 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
27	अक्टूबर	सोम	कार्तिक शुक्ल 6	डाला छठ
28	अक्टूबर	मंगल	---------- 7	
29	अक्टूबर	बुध	---------- 8	गोपाष्टमी
30	अक्टूबर	गुरु	---------- 9	अक्षय (आंवला) नवमी पंचक 2.15 रात से
31	अक्टूबर	शुक्र	---------- 10	पंचक
1	नवम्बर	शनि	---------- 11	देवउठनी एकादशी, पंचक
2	नवम्बर	रवि	---------- 12	चातुर्मास समाप्त, पंचक
3	नवम्बर	सोम	---------- 13	प्रदोष व्रत, पंचक
4	नवम्बर	मंगल	---------- 14	बैकुंठ चतुर्दशी पंचक 11.20 दिन तक
5	नवम्बर	बुध	---------- 15	स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6	नवम्बर	गुरु	अगहन कृष्ण 1	
7	नवम्बर	शुक्र	---------- 2	
8	नवम्बर	शनि	---------- 3	गणेश चतुर्थी
9	नवम्बर	रवि	---------- 4	

मेले में किसानों को मिली आधुनिक कृषि तकनीक एवं योजनाओं की जानकारी

बलरामपुर। रजत जयंती के अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र बलरामपुर में जिला स्तरीय किसान मेला का आयोजन किया गया। मेले में कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र, उद्यानिकी विभाग, पशुपालन विकास विभाग, मत्स्य पालन विभाग एवं रेशम पालन विभाग द्वारा विभिन्न विभाग के योजनाओं की जानकारी किसानों के साथ साझा की गई। साथ ही समस्त विभागों के द्वारा विभागीय योजनाओं की स्टॉल के माध्यम प्रदर्शनी भी लगाई गई, ताकि किसाना अधिक से अधिक योनजाओं से संबंधित जानकारी लेकर लाभ उठा सकें। कार्यक्रम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री धीरज सिंहदेव, जनपद अध्यक्ष सुश्री सुमित्रा चेरवा, जिला पंचायत सदस्य श्री बद्री यादव, गणमान्य नागरिक श्री गोपाल कृष्ण मिश्रा, सहित कृषि समिति के सदस्य, अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

यूरिया की कालाबाजारी पर कंपनी की अनुज्ञप्ति निरस्त

20 हजार का लगाया गया अर्थदंड

अम्बिकापुर। कलेक्टर कार्यालय सरगुजा (अम्बिकापुर) द्वारा जारी आदेश के तहत उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए अवैध रूप से यूरिया की कालाबाजारी करने पर मेसर्स विजय ट्रेडिंग कंपनी, नवागढ़ खरसिया रोड अम्बिकापुर की उर्वरक अनुज्ञप्ति निरस्त कर दी गई है। साथ ही कंपनी पर 20,000 रुपए का अर्थदंड भी लगाया गया है।

उप संचालक कृषि, अम्बिकापुर की जांच रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल से जुलाई 2025 के बीच 95 किसानों को 4743 बोरी यूरिया प्रदाय दिखाया गया था, जबकि भौतिक सत्यापन में मात्र 678 बोरी ही किसानों द्वारा खरीदी गई पाई गई। शेष 4065 बोरी यूरिया की बिक्री का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे कालाबाजारी की पुष्टि हुई।

अत: विजय ट्रेडिंग कंपनी का यह कृत्य उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के तहत गंभीर उल्लंघन है। उप संचालक कृषि अम्बिकापुर को निर्देशित किया गया है कि 15 दिवस के भीतर अर्थदंड की वसूली कर राशि शासन के मद में जमा कराएं तथा 7 दिवस के भीतर कंपनी की उर्वरक अनुज्ञप्ति निरस्त करने की प्रक्रिया पूर्ण करें। साथ ही यह भी निर्देश दिए गए हैं कि भविष्य में अनावेदक या उसके परिवार के किसी सदस्य के नाम पर नई अनुज्ञप्ति जारी न की जाए।

मिर्च की खेती से मिला आमदनी का नया रास्ता

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कृषि के साथ अन्य फसलों को लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उद्यानिकी विभाग के द्वारा किसानों को उद्यानिकी फसलों एवं साग सब्जी की खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है, ताकि उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके और किसानों की आय में निरंतर वृद्धि हो सके। उद्यानिकी विभाग के द्वारा किसानों को आधुनिक तकनीक से खेती करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। किसानों को उद्यानिकी विभाग द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्नत फसल उत्पादन करने के लिए बढ़ावा भी दिया जा रहा है।

जिससे प्रेरित होकर किसान पारंपरिक फसलों की जगह बागवानी एवं सब्जी की खेती की ओर आगे बढ़ रहे है। इसी तरह मनोरा विकासखण्ड के ग्राम केराकोना निवासी किसान श्री सायो ने भी उद्यानिकी विभाग से तकनीकी मार्गदर्शन लेकर उद्यानिकी फसलों की ओर अग्रसर हुए हैं। जहां उद्यानिकी विभाग द्वारा उनके खेत का परिक्षण एवं परिस्थितियों की जांच कर उन्हें मिर्च खेती का सुझाव दिया गया, जिसका अनुसरण करते हुए श्री सायो ने अपने खेत में मिर्च की खेती प्रारंभ की।

इस संबंध में किसान श्री सायो ने बताया कि उद्यानिकी विभाग के द्वारा उन्हें मिर्च के महत्व एवं लाभ के विषय के बारे में तकनीकी मार्गदर्शन में उन्होंने अपने कुल 3.6 हेक्टेयर की भूमि में से 0.3

हेक्टेयर भूमि पर मिर्च उत्पादन प्रारंभ किया। स्थानीय बाजार के साथ आस-पास की मंडियों में मिर्च की अच्छी मांग को देखते हुए विभागीय अधिकारियों के मार्गदर्शन में उन्होंने कार्य किया। जिस पर उन्हें अच्छी आमदनी प्राप्त हो रही है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक फसलों की जगह मिर्च के उत्पादन से मुझे दुगुनी आमदनी हो रही है। अगले फसल वर्ष में मिर्च की फसल और अधिक रकबे में करने के लिए उत्साहित हूं।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

किसान हैं विकसित भारत की रीढ़, तिलहन उत्पादन से बढ़ेगी आत्मनिर्भरता: श्री वर्मा

रजत जयंती पर तिलहन कृषक मेला सह सम्मेलन का आयोजन

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सारंगढ़ कृषि उपज मंडी प्रांगण में ''तिलहन कृषक मेला सह सम्मेलन'' का आयोजन किया गया। नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल के अंतर्गत कृषि कार्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्व, आपदा प्रबंधन, पुनर्वास एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्री टंकराम वर्मा शामिल हुए।

श्री वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य पर अग्रसर हैं। इस दिशा में दलहन-तिलहन का अधिक उत्पादन देश को खाद्य तेल के आयात से मुक्ति दिलाएगा और आर्थिक आत्मनिर्भरता मजबूत करेगा। इस अवसर पर श्री वर्मा ने कृषि, पशुपालन, उद्यानिकी एवं मत्स्य विभाग द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी स्टॉलों का अवलोकन करते हुए हितग्राहियों, महिला स्व-सहायता समूहों और विभागीय अधिकारियों से उत्पादों एवं तकनीकों की जानकारी ली। उन्होंने किसानों को नई कृषि तकनीकें अपनाने, मृदा परीक्षण शिविरों में भाग लेने तथा कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि सारंगढ़ क्षेत्र की मिट्टी तिलहन उत्पादन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।

कार्यक्रम में जांजगीर-चांपा सांसद श्री कमलेश जांगड़े, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री संजय भूषण पांडेय एवं कलेक्टर डॉ. संजय कन्नौजे सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी किसानों को संबोधित किया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों और हितग्राहियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री आंजनेय वार्ष्णेय, अपर कलेक्टर श्री प्रकाश सर्वे, पूर्व विधायक श्रीमती केराबाई मनहर तथा कृषि, मत्स्य, उद्यानिकी एवं पशुधन विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

किसानों की खुशहाली के लिए राज्य सरकार संकल्पित : श्रीमती राजवाड़े

जलाशय जीर्णोद्धार कार्यों का किया भूमिपूजन

रायपुर। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने सूरजपुर जिले के ग्राम लांजित, रैसरा और सम्बलपुर (सेमरा) में आयोजित जलाशय जीर्णोद्धार कार्यों के भूमिपूजन कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर विकास कार्यों की शुरुआत की।

लांजित में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों की खुशहाली और सिंचाई संसाधनों के विस्तार के लिए सतत कार्य कर रही है। जलाशयों के जीर्णोद्धार से किसानों को स्थायी जल उपलब्धता सुनिश्चित होगी, जिससे कृषि उत्पादन को नई दिशा और गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ग्रामीण अंचलों के सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्प है। किसानों की आय में वृद्धि और सिंचाई सुविधा का विस्तार सरकार की प्राथमिकता है।

सन् 1986 में निर्मित लांजित जलाशय लगभग 39 वर्ष पुराना है, जो लंबे समय से क्षेत्र के किसानों को खरीफ फसलों के लिए सिंचाई सुविधा प्रदान करता रहा है। बांध की कुल लंबाई 435 मीटर तथा जल भराव क्षमता 24.95 मिलियन क्यूबिक फीट है। इस जलाशय से दो नहरें निकलती हैं - बाईं नहर 1650 मीटर एवं दाईं नहर 3390 मीटर लंबी है। जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण होने पर जलाशय अपनी रूपांकित सिंचाई क्षमता 240 हेक्टेयर प्राप्त करेगा, जिससे अधिक किसानों को लाभ मिलेगा।प्रदेश

सरकार द्वारा इस जलाशय के जीर्णोद्धार एवं मरम्मत कार्य हेतु 258.55 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, पंचायत पदाधिकारी, जल संसाधन विभाग सहित अन्य विभागों के अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने भैयाथान में जीवनदीप समिति की बैठक में भी सहभागिता की और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुधार पर चर्चा की।

प्याज़ फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस से मिले पर्याप्त पोषण

RMPCL

प्याज़ फसल का मिले भरपूर उत्पादन

इंदौर (कृषक जगत)। भारतीय व्यंजनों के स्वाद में प्याज़ की अहम भूमिका रहती है। इसीलिए प्याज़ की वर्ष भर मांग को देखते हुए किसानों का प्याज़ की खेती की ओर रुझान बढ़ा है। इस वर्ष रबी सीजन में भी बड़े पैमाने पर प्याज़ की फसल ली जाएगी। प्याज़ की फसल में संतुलित पोषक तत्वों की पूर्ति होना आवश्यक है। प्याज़ फसल के बेहतरीन उत्पादन के लिए देश की प्रतिष्ठित उर्वरक कम्पनी आर.एम. फास्फेट्स एंड केमिकल्स लि. का उत्पाद महावीरा जिरोन पावर प्लस एक सही समाधान है, जिससे न केवल प्याज़ का आकार बड़ा होता है, बल्कि गुणवत्ता भी अच्छी होने से चमकदार प्याज़ का किसानों का बढ़िया दाम भी मिलता है।

आर. एम. फास्फेट्स एंड केमिकल्स लि. के सीनियर जीएम एवं हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पांडेय ने बताया कि महावीरा जिरोन पावर प्लस में 6 पोषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, ज़िंक, बोरोन और मैग्नीशियम समाहित रहते हैं, जो फसल को संतुलित पोषण प्रदान करते हैं। प्याज़ की रोपाई के समय डीएपी की जगह महावीरा जिरोन पावर प्लस का इस्तेमाल करने से अच्छे नतीजे मिलते हैं। यह उत्पाद डीएपी का बेहतर विकल्प है। श्री पांडेय ने कहा कि महावीरा जिरोन पावर प्लस की 3 बोरी/एकड़ की मात्रा अनुशंसित है। इस अनुशंसित मात्रा के प्रयोग से प्याज़ का 135 से 165 क्विंटल/एकड़ तक का उत्पादन लिया जा सकता है और 25 से 35 हज़ार रु /एकड़ का अतिरिक्त मुनाफा कमाया जा सकता है।

प्याज़ की फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस का महत्व - 6 पोषक तत्वों के मिश्रण वाला महावीरा जिरोन पावर प्लस प्याज़ फसल के लिए बहुत लाभदायक होता है। इसमें मौजूद फॉस्फोरस जड़ों की वृद्धि में सहायक होता है, वहीं कैल्शियम पौधों को मज़बूती प्रदान कर प्याज़ के कंद को दीर्घ अवधि तक सड़ने से बचाता है। जबकि सल्फर प्याज़ कंद में तीखापन और गंध बढ़ाकर एंजाइम और विटामिन बनाने में मदद करता है। ज़िंक, क्लोरोफिल बनाने में सहायक होने के साथ ही प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाने में सहयोग करता है। जहां बोरोन प्याज कंद के समान आकार और उसकी चमक बढ़ाने में सहायक होता है, वहीं मैग्नीशियम प्याज़ की फसल को स्वस्थ रखने के साथ ही उसे हरा बनाए रखता है।

प्याज़ फसल में पोषक तत्वों की अनुशंसित मात्रा

प्याज़ रोपाई के समय - महावीरा जिरोन पावर प्लस की तीन बोरी अर्थात् 150 किलोग्राम/ एकड़ प्रयोग करें। इसके साथ ही प्रति एकड़ 4 किलोग्राम सिमट्रॉन, 20 किलोग्राम यूरिया और 53 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश (एमओपी) एवं 750 ग्राम फेरोची अवश्य डालना चाहिए।

प्याज़ रोपाई के 25 से 30 दिन बाद - 250 मिलीमीटर बलेको, 45 किलोग्राम यूरिया एवं 250 मिलीलीटर एमिट्रॉन-ज़ेड प्रति एकड़ इस्तेमाल करें।

प्याज़ रोपाई के 45 से 50 दिन बाद - महावीरा मोनो अमोनियम फास्फेट (एमएपी) 12:61:100, 4 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज़ रोपाई के 50 से 55 दिन बाद- ज़िंटाविक 250 मिली लीटर, बोरट्री 200 मिलीलीटर एवं 22 किलोग्राम यूरिया/एकड़ दें।

महावीरा जिरोन पॉवर प्लस में उपलब्ध पोषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यून. प्रति.)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत

प्याज़ रोपाई के 60 से 65 दिन बाद - महावीरा कैल्शियम नाइट्रेट विथ बोरोन (सीएन + बी) 4 से 5 ग्राम/ लीटर पानी में एवं महावीरा पोटेशियम फॉस्फेट (एमकेपी) 00:52:34, 4 से 5 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज़ रोपाई के 80 से 85 दिन बाद - महावीरा पोटेशियम नाइट्रेट (एनओपी)13:00:45 एवं महावीरा पोटेशियम सल्फेट (एसओपी) 00:00:50 को 4 से 5 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

प्याज की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 40:24-32:20)

अवधि	ZIRON Power+ KG	MOP KG	UREA KG	SYMTRON KG	AMITRON-Z ML	BALECO ML	FEROCHI KG	MgSO4 KG
बुवाई के समय	150	30	45	4	0	0	1	0
25-30 दिन बाद में	0	0	20	0	-	200	0	25
50-55 दिन बाद में	0	0	22	0	250	0	0	0
कुल मात्रा KG/GM/ML	**150**	**30**	**87**	**4**	**250**	**200**	**1**	**25**
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी में	45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B+ 00:52:34 का तथा 80-85 दिन की अवधि में 13.00.45/00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करें।							

ICL

#सिर्फ_ICL!

हर दाने में पोषण
हर खेत में समृद्धि

ICL फर्टिलाइज़र्स से आपकी फसल को मिले ज़रूरी पोषक तत्व, जो दें फसल को मज़बूती और चमक |
गेहूं और चने की फसलों में बेहतर उत्पादन |

BIOZ ICL | Select™ | PeaK | Polysulphate | FertiFlow™ | NutriVant™ Foliar Nutrition Line

1800 210 3031 880 618 51 95
www.icl-growingsolutions.com